# “समकालीन हिन्दी उपन्यासों में ग्रामीण एवं शहरी महिलाओं की त्रासदी का तुलनात्मक अध्ययन”

## विश्वविद्यालय हिन्दी-विभाग

**ललित नारायण मिथिला विश्वविद्यालय, कामेश्वरनगर, दरभंगा**

**की पी-एच.डी. उपाधि के लिए प्रस्तावित**

# शोध-प्रारूप

**संकाय-मानविकी**

**विषय-हिन्दी**


**शोध निदेशक**

**डॉ० अखिलेश कुमार**
असिस्टेन्ट प्रोफेसर, हिन्दी-विभाग,
डॉ० एल०के०वी०डी० कॉलेज
ताजपुर, समस्तीपुर।

**शोधार्थी**

**देवेन्द्र पासवान**
पिता– स्व० राम शोभित पासवान
ग्राम+पो०– रूपौलीघाट, थाना- विसनपुर
जिला- दरभंगा।
नेट रॉल नं०– 15023311

## प्रस्तावित विषय:-

## “समकालीन हिन्दी उपन्यासों में ग्रामीण एवं शहरी महिलाओं की त्रासदी का तुलनात्मक अध्ययन”

**प्रस्तावना:-**

वैदिक काल से ही नारियों की संघर्ष की गाथा ओजपूर्ण, औदात्यपूर्ण एवं संवेदनात्मक रहा है। पौराणिक काल से लेकर आज तक त्रासदी के विभिन्न सोपानों से गुजरते हुए महिलाएँ अब प्रत्येक क्षेत्र में अपनी योग्यता का सर्वोतम प्रदर्शन कर रही है। नारी बिना पुरुष समाज एवं राष्ट्र की परिकल्पना नहीं की जा सकती।

आज की महिलाएँ परिवार, समाज एवं राष्ट्र निर्माण में अपनी महत्ती भूमिका निभा रही है। विकास की गति को गतिमान बनाए रखने के लिए स्त्रियों की भागीदारी महत्वपूर्ण हैं। जीवन की विभिन्न त्रासदी से गुजरते हुए दुराचार, अचानार, भ्रष्टाचार, शोषण सभी का विरोध करती है। समाज और राष्ट्र के विकास के लिए त्याग एवं बलिदान के भाव से काम करती है।

हिन्दी साहित्य में त्रासदी, दु:ख, विपत्ती, विषाद और दुर्भाग्य का द्योतक हैं। समकालीन हिंदी, उपन्यासों में महिलाओं की त्रासदी मूलक जीवन का विषद् चित्रण देखने को मिलता है। महिलाओं की जीवन संघर्ष, वेदना, विद्रोह एक नई संवेदना को जागृत करती है। त्रासदी प्रेरित महिला पात्र दर्शकों, पाठकों सोचने और समझने के लिए बाध्य कर देता है। कहा भी गया है कि ‘वेदना में एक शक्ति होती है जो दृष्टि देती हैं।’ समकालीन हिन्दी उपन्यासों में भूमंडलीकरण, बाजारवाद, महानगरों की समस्याएँ एवं स्त्रियों की समस्याओं को केन्द्र में रखा गया है। इन उपन्यासों पर मनोविश्लेषणवाद, अस्तित्ववाद, आधुनिकतावाद का प्रभाव स्पष्ट परिलक्षित होता है। फलस्वरूप अकेलापन, अजनबीपन, मोहभंग, विफलता, कुंठा, संत्रास जैसी भावनाएँ उभरकर सामने आती है। समकालीन हिंदी उपन्यासों में संबंध हीनता, संवेदना हीनता,

आत्मनिर्वासन जैसी प्रवृतियाँ विकसित हुई है। नवीन ज्ञान, शिक्षण-पद्धति, समाजिक, राजनितिक एवं राष्ट्रीय जागरण के कारण महिलाएँ काफी सशक्त हुई है और वे जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में बहुआयामी संघर्ष कर रही है।

प्रस्तुत शोध प्रबंध में समकालीन हिंदी उपन्यासों में ग्रामीण एवं शहरी महिलाओं की त्रासदी-मूलक जीवन का तुलनात्मक अध्ययन किया जाएगा। समकालीन हिंदी उपन्यासों में ग्रामीण एवं शहरी महिलाओं की दु:ख संवेदना, विपत्ती, दुर्भाग्य त्रासदी का तुलनात्मक अवलोकन करते हुए अंतर्वस्तु, शिल्प, संवेदना का व्यस्थित ढंग से विवेचन, विश्लेषण किया जाएगा। इस विवेचन में यह भी स्पष्ट हो पाएगा कि समकालीन हिंदी उपन्यासों में ग्रामीण एवं शहरी महिलाओं की त्रासदी क्या है, इसका स्वरूप क्या है। महिलाओं की शिक्षा, विवाह, संघर्ष, पारिवारिक समस्याएँ, सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक, सांस्कृतिक एवं संवेनदनात्मक जीवन की पड़ताल की जाएगी। स्वतंत्र महिला और उसके जीवन संघर्ष, ग्रामीण महिला और शहरी महिलाओं की जीवन संघर्ष का तुलनात्मक अवलोकन प्रस्तुत किया जाएगा।

समकालीन हिंदी उपन्यासों में ग्रामीण एवं शहरी महिलाओं के कुंठा, संत्रास, अकेलापन, अजनबीपन, आत्मपीड़न, असंतोष, दु:ख, संवेदना की पड़ताल की जाएगी। ग्रामीण एवं शहरी महिलाओं की त्रासदी की विषद् व्याख्या प्रस्तुत की जाएगी। जो समकालीन हिंदी उपन्यास को समृद्ध करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगा।

**शोध का उद्देश्य:-**

प्रस्तुत शोध प्रबंध में समकालीन हिंदी उपन्यासों का वस्तुनिष्ठ अवलोकन प्रस्तुत किया जाएगा। समकालीन हिंदी उपन्यास के शिल्प एवं संवेदना को प्रस्तुत किया जाएगा। किस प्रकार से साम्यवाद, मनोविश्लेषणवाद, आधुनिकता, उत्तर-आधुनिकता, अस्तित्ववाद और भूमंडलीकरण का प्रभाव समकालीन हिंदी उपन्यासों पर हैं इसकी मीमांसा की जाएगी, सैद्धांतिक विमर्श किया जाएगा।

पश्चिम के समाज-शास्त्र एवं समकालीन हिंदी उपन्यासों ने विभिन्न पहलुओं को प्रभावित किया है और स्त्री विमर्श ने समकालीन हिंदी उपन्यासों को एक नया औचित्य दिया है। भारतीय साहित्य-दर्शन एवं वांग्मय विमर्श का भी समकालीन हिंदी उपन्यासों पर प्रभाव पड़ा है स्त्री विमर्श आंदोलन का रूप ग्रहण कर लिए हुए है। आधी आबादी का संघर्ष पुरूषों के बराबर अधिकार प्राप्त करने का संघर्ष है। पश्चिमी साहित्य दर्शन एवं भारतीय साहित्य दर्शन के समन्वय नें समकालीन हिंदी उपन्यासों के स्वरूप को बदल दिया है स्त्री के यथार्थ स्वरूप, संघर्ष, अन्तर्द्वंद को दिखाने का प्रयत्न किया गया है।

प्रस्तुत शोध-प्रबंध में ग्रामीण एवं शहरी महिलाओं की त्रासदी मूलक जीवन का तुलनात्मक अध्ययन प्रस्तुत किया जाएगा। ग्रामीण एवं शहरी महिलाओं की त्रासदी, संत्रास, विपत्ती, दुर्भाग्य, आपदा, अकेलापन, अन्तर्द्वंद का रेखांकन किया जाएगा, उसकी पड़ताल की जाएगी। जो आगे शोध की दृष्टि से उपयोगी सिद्ध होगी। महिलाओं के अस्तित्व एवं जीवन संघर्ष का तुलनात्मक व्याख्या प्रस्तुत की जाएगी। समकालीन हिंदी उपन्यासों में शहरी एवं ग्रामीण महिलाओं की त्रासदी का पारिवारिक, सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक, सांस्कृतिक समस्याओं का रेखांकन किया जाएगा और तुलनात्मक, आलोचनात्मक, विश्लेषणात्मक स्वरूप प्रस्तुत किया जाएगा। समकालीन हिन्दी उपन्यासों में ग्रामीण एवं शहरी महिलाओं की त्रासदी की संवेदना का सौन्दर्य का उद्घाटन किया जाएगा।

**पूर्व में किए गए शोध कार्य:-**

अबतक के अधिकतम जानकारी के अनुसार इस विषय पर कोई शोध कार्य नही हुआ है। इसलिए प्रस्तुत शोध अध्ययन का औचित्य स्वत: सिद्ध होता है। यह विषय स्वतंत्र एवं प्रासंगिक है। जो समकालीन हिंदी उपन्यासों के पाठकों के लिए उपयोगी सिद्ध होगी। ‘‘समकालीन हिन्दी उपन्यासों में ग्रामीण एवं शहरी महिलाओं की त्रासदी का तुलनात्मक अध्ययन’’ विषय स्वतंत्र एवं नवीन है जो साहित्यिक शोध परंपरा को समृद्ध करेगा। प्रस्तुत शोध कार्य में समकालीन हिंदी उपन्यास की नवीन प्रवृतियों को रेखांकित

किया जाएगा। आज के संदर्भ में ग्रामीण एवं शहरी महिलाओं की त्रासदी का तुलनात्मक अवलोकन प्रस्तुत किया जाएगा। यद्यपि इस संदर्भ में अब तक कोई अनुसंधान कार्य नहीं हुआ है इस दृष्टि से यह विषय अत्यंत नवीन और प्रासंगिक हैं।

## आधार ग्रंथः-


1. काशीनाथ सिंह, महुआ चरित, राजकमल प्रकाशन-2012
2. अब्दुल बिस्मिल्लाह, समर शेष है, राजकमल प्रकाशन-2001
3. काशीनाथ सिंह, रेहन पर रग्धु, राजकमल प्रकाशन-2014
4. नासिरा शर्मा, शाल्मली, किताबघर प्रकाशन-1987ई.
5. चित्ता मुद्गल, एक जमीन अपनी, प्रभात प्रकाशन-1990ई.
6. प्रभा खेतान, छिन्नमस्ता, राजकमल प्रकाशन-1993 ई.
7. सुरेन्द्र वर्मा, मुझे चाँद चाहिए, भारतीय ज्ञानपीठ, नयी दिल्ली
8. ममता कालिया, एक पत्नी के नोट्स, किताबघर प्रकाशन-1997ई.
9. कृष्ण बलदेव बैद, एक नौकरानी की डायरी, राजपाल एण्ड संस-2001ई.
10. अनामिका, तिनका तिनके आग, वाणी प्रकाशन, नयी दिल्ली-2008ई.
11. ममता कालिया, अँधेरे का ताला, वाणी प्रकाशन, नयी दिल्ली-2009ई.
12. प्रदीप सौरभ, मुन्नी मोबाईल, वाणी प्रकाशन, नयी दिल्ली-2009ई.
13. मैत्रेयी पुष्पा, गुनाह- बेगुनाह, राजकमल प्रकाशन, 2011ई.
14. रजनी गुप्ता, ये आम रास्ता नहीं, वाणी प्रकाशन, नयी दिल्ली-2013ई.
15. मैत्रेयी पुष्पा, फ़रिश्ते निकले, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, 2016

16. नमिता सिंह, अपनी सलिबें, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, 2008

17. अलका सरावगी, कली कथा वाया वायपास, किताबघर प्रकाशन, नई दिल्ली, 2005

18. नासिरा शर्मा, ठीकरे की मंगनी, किताबघर प्रकाशन, नई दिल्ली

**शोध की परिकल्पना:-**

समकालीन हिंदी उपन्यासों का विषय, वैविध्यपूर्ण है। जिसमें ग्रामीण एवं शहरी महिलाओं की त्रासदी का तुलनात्मक अध्ययन किया जाएगा। त्रासदी की संवेदना और सौन्दर्य का उद्घाटन किया जाएगा। ग्रामीण एवं शहरी महिलाओं की त्रासदी को प्रस्तुत किया जाएगा। मूल्यांकन किया जाएगा, विश्लेषण किया जाएगा। इस शोध-प्रबंध में ग्रामीण एवं शहरी महिलाओं की त्रासदी का तुलनात्मक, आलोचनात्मक, विवरणात्मक, मीमांसा प्रस्तुत किया जाएगा। ग्रामीण एवं शहरी महिलाओं की त्रासदी को उजागर किया जाएगा।

**शोध प्रविधि:-**

प्रस्तावित शोध कार्य में समकालीन हिंदी उपन्यासों के सौंदर्यशास्त्र का उद्घाटन किया जाएगा। वैज्ञानिक अध्ययन विधि से सामग्री संकलन, अध्ययन, विश्लेषण एवं प्रतिपादन किया जाएगा। प्रस्तुत शोध कार्य में आगमन एवं निगमन विधि प्रयुक्त की जाएगी। स्त्री त्रासदी का चित्रण समाजशास्त्रीय, मनोविश्लेषणवादी, मार्क्सवादी और अस्तित्ववादी सिद्धांतों के परिपेक्ष्य में किया जाएगा। प्रस्तुत शोध-प्रबंध में तुलनात्मक, आलोचनात्मक, विश्लेषणात्मक, विवरणात्मक विविधाँ प्रयुक्त की जाएगी।

**अध्यायीकरण:-**

प्रस्तुत शोध-प्रबंध के प्रस्तावित अध्याय निम्नवत् हैं।

| | | |
|---|---|---|
| **प्रस्तावना** | :- | अध्ययन का औचित्य एवं दिशाएँ |
| **प्रथम अध्याय** | :- | समकालीन हिंदी उपन्यासों की प्रमुख प्रवृतियों का अध्ययन |
| **द्वितीय अध्ययन** | :- | समकालीन हिन्दी उपन्यासों में ग्रामीण एवं शहरी महिलाओं की शैक्षणिक जीवन की त्रासदी |
| **तृतीय अध्याय** | :- | समकालीन हिंदी उपन्यासों में ग्रामीण एवं शहरी महिलाओं की पारिवारिक जीवन की त्रासदी |
| **चतुर्थ अध्याय** | :- | समकालीन हिंदी के उपन्यासों में ग्रामीण एवं शहरी महिलाओं के सामाजिक जीवन की त्रासदी |
| **पंचम अध्याय** | :- | समकालीन हिंदी उपन्यासों में ग्रामीण एवं शहरी महिलाओं की राजनीतिक जीवन की त्रासदी |
| **षष्ठम अध्याय** | :- | समकालीन हिंदी उपन्यासों में ग्रामीण एवं शहरी महिलाओं के आर्थिक जीवन की त्रासदी |
| **सप्तम अध्याय** | :- | समकालीन हिंदी उपन्यासों में शहरी एवं ग्रामीण महिलाओं की संवेदनात्मक जीवन की त्रासदी |
| **अष्ठम अध्याय** | :- | उपसंहार |

## संदर्भ ग्रंथ सूची-


1. संपादक, धीरेन्द्र वर्मा, हिन्दी साहित्य कोश, भाग-1, परिभाषिक शब्दावली, ज्ञान मंडल लिमिटेड, पुर्नमुद्रण, जुलाई-2013ई.
2. डॉ० अमरनाथ, हिन्दी आलोचना की पारिभाषिक शब्दावली, राजकमल प्रकाशन, पाँचवा छात्र संस्करण-2018ई.
3. डॉ० रामचन्द्र तिवारी, हिन्दी का गद्य-साहित्य, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी, दशम संस्करण-2015ई.
4. संपादक- डॉ० प्रभात कुमार 'प्रभाकर', हिन्दी साहित्य विविध विमर्श, शुभम पब्लिकेशन, 2020ई.
5. संपादक- डॉ० नगेन्द्र, हिन्दी साहित्य का इतिहास, मयूर बुक्स, नयी दिल्ली, 70वां संस्करण-2019ई.
6. राम स्वरूप चतुर्वेदी, हिन्दी साहित्य और संवेदना का विकास, लोक भारती प्रकाशन, प्रयाग राज छब्बीसवां संस्करण-2021ई.
7. कल्पना वर्मा, समकालीन लेखन और आधुनिक संवेदना, लोकभारती इलाहाबाद- 2010ई.
8. गोपाल राय, उपन्यास की संरचना, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली- 2012ई.
9. विजय बहादुर सिंह, उपन्यास समय और संवेदना, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली- 2013ई.
10. मैनेजर पाण्डेय, आलोचना में सहमति असहमति, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली- 2013ई.
11. डॉ० वी. के अब्दुल अलील, समकालीन हिंदी उपन्यास समय और संवेदना, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली- 2013ई.
12. राजेन्द्र यादव, उपन्यास स्वरूप ओर संवेदना, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली- 2015ई.
13. परमानन्द श्रीवास्तव, उपन्यास का पुनर्जन्म, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली- 2015ई.
14. मैनेजर पाण्डेय, उपन्यास और लोकतंत्र, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली- 2013ई.
15. डॉ० हरदेव बाहरी, हिन्दी शब्द-कोश, राजपाल एण्ड सन्स, नई दिलली- 2016ई.
16. विजय मोहन सिंह, आधुनिक गद्य-साहित्य का विकास और विश्लेषण भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन नई दिल्ली- 2019ई.

## पत्र-पत्रिकाएँ:-

1. आलोचना, राजकमल प्रकाशन प्रा० लिमिटेड

2. हंस, अक्षर प्रकाशन प्रा० लि०, नई दिल्ली-2

3. कथादेश, सहयात्रा प्रकाशन प्रा० लि०, दिल्ली

4. वागर्थ, भारतीय भाषा परिषद, कोलकाता-17

5. आजकल, प्रकाशन विभाग, नई दिल्ली

6. केदारनाथ सिंह, साखी, मुद्रक, विकास कम्प्यूअर एंड सन्स, नई दिल्ली- 2019ई.

**शोध निदेशक**

**डॉ० अखिलेश कुमार**
असिस्टेन्ट प्रोफेसर, हिन्दी-विभाग,
डॉ० एल०के०वी०डी० कॉलेज
ताजपुर, समस्तीपुर।

**शोधार्थी**

**देवेन्द्र पासवान**
पिता– स्व० राम शोभित पासवान
ग्राम+पो०– रूपौलीघाट, थाना- विसनपुर
जिला- दरभंगा।
नेट रॉल नं०– 15023311

**डॉ. अखिलेश कुमार**
एम. ए.. नेट/जे.आर.एफ.
पी-एच.डी.

असिस्टेन्ट प्रोफेसर, हिन्दी-विभाग,
डॉ० एल०के०वी०डी० कॉलेज
ताजपुर, समस्तीपुर।

पत्रांक : ..........................                                        दिनांक : ..........................

# सहमति–पत्र

शोध-पूर्व-परीक्षोतीर्ण शोधार्थी **देवेन्द्र पासवान**, पैट क्रमांक- E2209054 द्वारा प्रस्तुत शोधकार्याधारित शीर्षक **"समकालीन हिन्दी उपन्यासों में ग्रामीण एवं शहरी महिलाओं की त्रासदी का तुलनात्मक अध्ययन"** विषय पर शोध-निर्देशन देना मुझे स्वीकार है। मेरी जानकारी में इस विषय से संबंधित शोध कार्य पूर्व में नहीं हैं। इसलिए यह शोधकार्य मौलिक स्थापना की ओर सम्भावित है।

शोधार्थी **देवेन्द्र पासवान** व्यवहार-कुशलता एवं आचरण-शुद्धता के आत्मिक आलोक से आलोकित प्रतीत होते है। मैं इनके उज्ज्वल भविष्य की हार्दिक कामना करता हूँ तथा **देवेन्द्र पासवान** के इस प्रस्तावित शोध कार्य के निर्देशन हेतू अपनी सहमति देता हूँ।

**अखिलेश कुमार**

शोध-निर्देशक

# अन्तर विश्वविद्यालय केन्द्र (आइयूसी) को प्रेषित करने हेतु सम्बद्ध

**"समकालीन हिन्दी उपन्यासों में ग्रामीण एवं शहरी महिलाओं की त्रासदी का तुलनात्मक अध्ययन"**

## शोध-सारांश

समकालीन हिंदी उपन्यासों का कैनवास काफी व्यापक है। स्त्री विमर्श ने समकालीन हिंदी उपन्यास लेखन को काफी प्रभावित किया है। आज महिलाएं जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में संघर्ष कर रही हैं और पहचान बना रही है। स्त्रियों के बिना पुरुष, समाज,राष्ट्र की परिकल्पना नहीं की जा सकती। समकालीन हिंदी उपन्यासों में ग्रामीण एवं शहरी महिलाओं की त्रासदी का यथार्थ चित्रण हुआ है।

प्रस्तावित शोध में समकालीन हिंदी उपन्यासों में ग्रामीण एवं शहरी महिलाओं की त्रासदी का तुलनात्मक अध्ययन प्रस्तुत किया जाएगा। विभिन्न पहलुओं को उजागर किया जाएगा, उसकी पड़ताल की जाएगी। यह दिखाने का प्रयत्न किया जाएगा कि किस प्रकार ग्रामीण एवं शहरी महिलाएं पारिवारिक, सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक, सांस्कृतिक गतिविधियों में संलग्न है।

**शोध निदेशक**

**डॉ० अखिलेश कुमार**
असिस्टेन्ट प्रोफेसर, हिन्दी-विभाग,
डॉ० एल०के०वी०डी० कॉलेज
ताजपुर, समस्तीपुर।

**शोधार्थी**

**देवेन्द्र पासवान**
पिता– स्व० राम शोभित पासवान
ग्राम+पो०– रूपौलीघाट, थाना- विसनपुर
जिला- दरभंगा।
नेट रॉल नं०– 15023311